B.A Part II
(Sub.)
3rd days

हुमायूँ का शेष भाग

(3)

हुमायूँ को शेरशाह ने बीच में नहीं रोका और चौसा तक बढ़ने दिया। 26 जून 1539 को रात में शेरशाह ने गंगा पार की और हुमायूँ पर आक्रमण कर दिया। हुमायूँ ने निजाम नामक भिश्ती की सहायता से अपनी जान बचायी और आगरा पहुँचा। चौसा मे विजय के साथ ही शेरशाह ~~[illegible]~~ बंगाल और बिहार का स्वामी बन गया। अब उसकी नजर मुगल सिंहासन पर थी। उसने आगले ही वर्ष 17 मई 1540 ई० को हुमायूँ को बिलग्राम के युद्ध मे पराजित ~~[illegible]~~ कर दिया।

बिलग्राम (कन्नौज) में हारने के बाद हुमायूँ पंजाब पहुँचा। अफगानों ने यहाँ भी उसका पीछा किया और ~~[illegible]~~ उसे लाहौर अपने भाई कामरान के पास भागना पड़ा। लेकिन उसके भाई ने भी उसका कोई मदद नही की। तब वह मजबूर होकर सिन्ध गया। यहाँ रेगिस्तान मे हुमायूँ ने तीन वर्ष व्यतीत किया और उसको पुत्र रत्न (अकबर) की प्राप्ति हुई। परन्तु यहाँ भी किसी प्रकार की मदद प्राप्त न हो सकी। सिन्ध मे ही बैरम खॉ से मुलाकात हुई। जिसने उसे पर्शिया जाने की सलाह दी और वह ईरान चला गया। ईरान के शाह ~~[illegible]~~ ने उसे मदद देना स्वीकार कर लिया लेकिन शर्त रख दिया कि वह शिया धर्म स्वीकार करे और कन्धार पर विजय प्राप्त कर उसे सौंप दे।